International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 09-08-2021, Accepted: 24-08-2021, Published: 09-09-2021
Volume 7; Issue 5; 2021; Page No. 12-14

रामायण में प्रक्षिप्त की प्रामाणिकता

डॉ. आर्य कुमार हर्षवर्धन
प्राध्यापक, हिन्दी विभाग, खीष्ट महाविद्यालय, कटक, ओड़िशा, भारत

सारांश
रामायण में प्रक्षिप्त की प्रमाणिकता लेकर विद्वानों में मतभेद है परंतु प्रमाणिकता के आधार पर विश्लेषण करने पर पता चलता है कि दीर्घ काल खंड की अवधि पर रामायण में बहुत सारे प्रक्षिप्तांशों को जोडा गया है। वाल्मिकीय रामायण की कुल सर्ग संख्या 645 से बालकांड के चतुर्थ सर्ग में वर्णित श्लोक के अनुसार कुल सर्ग संख्या पांच सौ सर्ग वियोग कर देने से जो 145 सर्ग बच जाता है उसे अगर हम प्रक्षिप्त की संज्ञा देंगे तो कोई आश्चर्य की बात नहीं होगी। इस 145 सर्ग को ही चिह्नित करने का प्रयास इस आलेख का मुख्य उद्देश्य है।

मूलशब्दः प्रक्षिप्त, ऋषिप्रोक्त, आदिकाव्य,इक्ष्वाकुवंशोत्पन्न राम,अनर्घराघव,कंबन रामायण, रामोपाख्यान, शंबूक वध, समुद्र मंथन, अवतारवाद, मानवसाध्य पुरूषार्थ, विपुलाच पृथ्वी

प्रस्तावना

वाल्मीकीय रामायण के बालकांड, चतुर्थ सर्ग में श्लोकों की संख्या और सर्गों का एक आकलन उपलब्ध है चतुर्विंशस्त्राहस्रोणिश्लोकानामुक्तवानृषिः। तथा सर्गशतान पश्चषट्काण्डानि तथोत्तरम् । (4:2) अर्थात, रामायण में महर्षि वाल्मीकी ने चौबीस हजार श्लोक, पांच सौ सर्ग तथा उत्तर सहित सात कांडों का प्रतिपादन किया है।

यहाँ ध्यान देने योग्य विषय यह है कि वर्त्तमान उपलब्ध वाल्मीकीय रामायण में सर्गों की कुल संख्या है – बालकांड 77 सर्ग + अयोध्याकांड 119 सर्ग + अरण्यकांड 75 सर्ग + किष्किंधाकांड 67 सर्ग + सुंदरकांड 68 सर्ग + युद्धकांड 928 सर्ग + उत्तरकांड 111 सर्ग = 645 सर्ग।

अतएव वर्त्तमान प्रचलित वाल्मीकीय रामायण की कुल सर्ग संख्या 645 से बालकांड के चतुर्थ सर्ग में वर्णित श्लोक के अनुसार कुल सर्ग संख्या पांच सौ सर्ग वियोग कर देने से जो 145 सर्ग बच जाता है उसे अगर हम प्रक्षिप्त की संज्ञा देंगे तो कोई आश्चर्य की बात नहीं होगी ।

पुनः 145 सर्ग जो प्रक्षिप्त हैं, वे वाल्मीकीय रामायण के कहाँ कहाँ छिपे हैं उसे चिन्हित करने के लिए हमें युद्धकांड के 128वें सर्ग के 106 श्लोक का विश्लेषण करना अनिवार्य है, जहाँ उल्लेख हैः

धर्म्यंयशस्यमायुष्य राजा च विजयावहम् । आदिकाव्यमिदं चार्षं पुरा वाल्कीकिना कृतम् ।।

अर्थात, यह ऋषिप्रोक्त आदिकाव्य रामायण है, जिसे पूर्वकाल में महर्षि वाल्मीकि ने बनाया था । यह धर्म, यश तथा आयु की वृद्धि करनेवाला एवं राजाओं को विजय देनेवाला है ।

रामायण की फलश्रुति स्वरूप रामायण कथा यहाँ समाप्त होती है। पुनश्च रामायण कथा तथा रामायण की महिमा को लोगों के मन में दृढिभूत करने के लिए कुछ श्लोक जोड़े गए हैं जो इस श्लोक से ही समाप्त हो जाता है।

रामायणमिदं कृत्युं श्रृण्वतः पठतः सदा प्रीयते सततं रामः स हि विष्णुः सनातनः। (युद्ध कांड 128: 119) अर्थात, जो नित्य इस संपूर्ण रामायण का श्रवण एवं पाठ करता है, उसपर सनातन विष्णुस्वरूप भगवान श्रीराम सदा प्रसन्न रहते हैं। इसके पश्चात ही कुछ श्लोक सहित उत्तरकांड का प्रकरण शुरू हो जाता है । इसलिए रामायण अध्येता फादर कमिल बुल्के के अनुसार रामायण के प्रायः समालोचक उत्तरकांड को प्रक्षिप्त मानते हुए सप्रमाण कारण भी प्रस्तुत करते हैं। (बुल्के 1950:122)

उत्तरकांड को प्रक्षिप्त के रूप में प्रमाण हेतु एक और प्रमाण हमें बालकांड में ही प्राप्त होता है । बालकांड के प्रथम सर्ग में ही एक अनुक्रमणिका है जिसमें केवल अयोध्याकांड से लेकर युद्धकांड तक जो जो भी घटित हो चुका है उस कथा का उल्लेख किया गया है । देवर्षि नारद से जब महर्षि बाल्मीकि "संप्रति संसार में सर्वश्रेष्ठ सत्पुरुष" का परिचय पूछते हैं तो नारद इक्ष्वाकु वंशोत्पन्न राम के बारे में सविशेष बताते हैं । "नारद उवाच" को अगर हम अनुक्रमणिका के तौर पर ग्रहण करें तो इसमें अयोध्या नरेश दशरथ अपने ज्येष्ठ पुत्र राम को युवराज पद पर अभिषिक्त करने की अभिप्सा से शुरू होकर राम–लक्ष्मण सीता का वनवास, सीताहरण तथा रावण मरण के बाद रामचंद्रजी ने नंदिग्राम में अपनी जटा कटाकर पुनः अयोध्या के राजसिंहासन पर अभिषिक्त होने तक की कथा का उल्लेख है । (बाल कांड 1:19–89) इस अनुक्रमणिका में उत्तरकांड के विषय में सामान्य सूचना भी नहीं है। यद्यपि अत्यंत चालाकी से बालकांड के चतुर्थ सर्ग द्वितीय श्लोक के अंत में यह जोड़ दिया गया है– "षट्काण्डानि तथोत्तरम्।"

रामायण के पूर्णावयव को गंभीरता से शैली की दृष्टि से विश्लेषण करने पर यह दर्शनीय है कि उत्तरकांड की रचना शैली अन्य प्रामाणिक कांडों की शैली से भिन्न है। उत्तर कांड के प्रारंभिक 35 सर्गों में रावण संबंधित कथाक्रम तथा हनुमान की उत्पत्ति आदि वृतांतों के बाद रामचरित को आगे विस्तारित करने की कोशिश की गयी है । लेकिन कई प्रकार के असंगत कथाओं का पुनः विन्यास करने के कारण कथा में प्रवाह का अभाव स्पष्ट दिखाई देता है । इसमें वर्णित नृग, निमि, ययाति, श्वेत, इंद्र, इल आदि के वृतांत रामकथा से बिलकुल संबंध नहीं रखते । बाकी सामग्री यद्यपि रामकथा से ना तो दीर्घ संपर्क रखता है फिर भी एकसूत्रता पिरौने में असमर्थ सा प्रतीत होता है । उत्तरकांड में वर्णित सीता परित्याग, शत्रुघ्न–चरित, शम्बुक वध, राम का अश्वमेध यज्ञ, सीता का तिरोधान आदि प्रसंग एक दूसरे से अलग थलग पड़े हुए हैं । इस कथाक्रम में कोई आंतरिक संबंध नहीं है। इसके अलावा उत्तरकांड में श्रीराम के अवतारवाद प्रसंग को

इतना ज्यादा महत्व दिया गया है कि ऐसा लगता है जैसे रामायण में परवर्त्ती प्रक्षेप के रूप में यह जोड़ दिया गया है ।
रामायण में वर्णित युद्धकांड की कथा और उत्तरकांड में वर्णित कथा विन्यास में तो वैषम्य है । इसके साथ साथ परस्पर विरोधी बातों का भी स्पष्ट उल्लेख यहाँ देखने को मिलता है । जैसे युद्धकांड में उल्लेख है :

विभिषणोऽथ सुग्रीवो हनुमाञ्जाम्बवांस्तथा । सर्वे वानरमुख्याश्र रामेणाक्लिष्टकर्मणा ।। यथार्हं पूजितारू सर्वे कामै रत्नैश्च पुष्कलैः। प्रह्रष्टमनसः सर्वे जम्मुरेव यथागतम् ।। (युद्ध कांड 128:85–86) अर्थात, अनायास ही महान कर्म करनेवाले श्रीराम ने विभीषण, सुग्रीव, हनुमान तथा जाम्बवान आदि सभी श्रेष्ठ वानर वीरों का मनोवांछित वस्तुओं एवं प्रचुर रत्नों द्वारा यथायोग्य सत्कार किया । वे सब के सब प्रसन्नचित्त होकर जैसे आये थे, उसी तरह अपने अपने स्थानों को चले गये ।

लेकिन उत्तरकांड में इन वानर वीरों को पुनः प्रस्थान होने का वर्णन मिलता है (उत्तर कांड 50) । युद्धकांड में विदाई का एक अलग दृश्य है तो उत्तरकांड में विदाई का एक और दृश्य देखने को मिलता है । विशेषतः विदाई के समय युद्धकांड में हनुमान को उत्तम मणियों से युक्त मुक्ताहार (जो चंद्रमा की किरणों के समान प्रकाशमान होता था) को सीता ने दी थी (युद्ध कांड 128:81–82) । लेकिन उत्तरकांड में चन्द्रमा के समान उज्ज्वल हार को अपने कंठ से उतारकर श्रीराम ने हनुमानजी के गले में बांध दिया (उत्तरकांड 40:25)।

इसी प्रकार "शम्बुक वध" के प्रसंग में भी विरोधी बातें मिलती हैं । युद्धकांड में यह उल्लेख मिलता है कि –

विमानं पुष्पकं दिव्यं संगृहितं तु रक्षसा । अगमद् धनदं वेगाद् रामवाक्यप्रचोदितम् । (युद्ध कांड 127:63)

अर्थात राक्षस रावण ने जिस दिव्य पुष्पक विमान पर बलपूर्वक अधिकार कर लिया था, वही अब श्रीरामचन्द्रजी की आज्ञा से प्रेरित हो वेगपूर्वक कुबेर की सेवा में चला गया लेकिन उत्तरकांड में वर्णन है कि श्रीराम पुष्पक विमान द्वारा अपने राज्य की सभी दिशाओं में घूमकर दक्षिण दिशा में स्थित शैवल पर्वत के ऊपर तपस्यारत शंबुक का वध करते हैं (उत्तरकांड 75–76)।

सिर्फ इतना ही नहीं, उत्तरकांड में वर्णन है कि सीता अपने पूर्वजन्म में वेदवती ही थी (उत्तरकांड 17)। लेकिन इस कथा की पुष्टि कहीं भी नहीं होती जहाँ कहीं भी सीता–जन्म की कथा उल्लिखित है।

रामायण में उत्तरकांड प्रक्षिप्त है, इसका स्वतः प्रमाण तो हम देख चुके हैं। वरन् परतः प्रमाण भी यह प्रमाणित करता है। रामायणोपरांत महाभारत में "रामोपाख्यान" का वर्णन है जिसमें रामायण का संक्षिप्त रूप का वर्णन मिलता है । इसमें यद्यपि प्रारंभ में रावणचरित की कुछ सामग्री मिलती है, किंतु राम का राज्याभिषेक और रामराज्य की स्तुति पर समाप्त होती है । इसके अनंतर जो राम काव्य की परंपरा आगे बढ़ी उसमें से कुमारदास कृत "जानकी हरण", अभिनंद कृत "रामचरित", भाष कृत "अभिषेक नाटक", मुरारि कृत "अनर्घराघव", राजशेखर कृत "बाल रामायण", कम्बन का प्राचीनतम तमिल रामायण, तेलगु भाषा में लिखित "दिवपद् रामायण" तथा जावा का रामायण कक्विन आदि में वाल्मीकिय रामायण में वर्णित उत्तरकांड की कथा को उपेक्षा कर दिया गया है। इसलिए परोक्ष प्रमाण से भी यह प्रमाणित हो जाता है कि उत्तरकांड को परवर्ती समय में ही मूल रामायण में जोड़ दिया गया है।

डॉ. हरमान याकोवी का मानना है कि उत्तरकांड की भाँति बालकांड भी प्रक्षिप्त है (डस रामायण 1960:28, 64) । प्रमाण के तौर पर उनका कहना है कि रामायण के अनुक्रमणिका (सर्ग 1) में उत्तरकांड की भाँति बालकांड के सम्बन्ध में भी सूचना नहीं है। इसी तरह सुंदरकांड में हनुमान अशोकवाटिका में सीता को विश्वास दिलाने के लिए रामायण का पूर्वोक्त घटित कथा का सार सुनाते हैं। उसमें भी बालकांड में वर्णित प्रमुख कथाओं को अनदेखा किया गया है । वरन् दशरथ और राम के परिचय के पश्चात तुरंत अयोध्याकांड की कथावस्तु प्रारंभ हो जाती है । यह भी विचारणीय है कि बालकांड की शैली उत्तरकांड की शैली से अनेकांश मिलती जुलती है।

बालकांड में वर्णित सगर कथा, समुद्र मंथन, विश्वामित्र की कथा तो पुराणों की शैली पर ही लिखे गये प्रतीत होते हैं । बालकांड में सम्मिलित सामग्री का संबंध रामायण के प्रामाणिक कांडों में कहीं भी उल्लेख नहीं मिलता। अरण्यकांड में लक्ष्मण को अविवाहित भी कहा गया है (अरण्यकांड 18:6)। इस प्रकार भरत और शत्रुघ्न का विवाह का वर्णन बालकांड में है लेकिन अन्य प्रामाणिक कांडों में विवाह को पुष्ट करने का प्रमाण प्राप्त नहीं होता (बुल्के 1972:124–125) ।

निष्कर्ष

बालकांड और उत्तरकांड में वर्णित अवांतर कथाओं के अतिरिक्त सब से महत्वपूर्ण प्रक्षिप्त सामग्री है राम का अवतारवाद प्रसंग । बालकांड से लेकर उत्तरकांड तक जहाँ जहाँ भी विष्णु के अवतार के रूप में राम को वर्णन किया गया है वे सारे प्रक्षिप्त हैं क्योंकि प्रामाणिक अध्यायों को विश्लेषण करने पर यह अवतारवाद निराधार हो जाता है । रामायण के प्रमुख चरित्र भी इस प्रसंग को प्रमाणित नहीं करते हैं । स्वयं वाल्मीकि भी सर्वप्रथम नारद से पूछते हैं।

को वस्मिन साम्प्रतं लोके गुणवान कश्च वीर्यवान ।
x x x महर्षे त्वं समर्थो सिजातुमेंवंविश्चंनरम् ।

(बालकांड 1:2, 5) अर्थात, इस समय (सम्प्रतिं) इस धरातल पर कौन ऐसा सर्वगुण सम्पन्न व्यक्ति है ? महर्षि ! मैं यह सुनने के लिए बडी उत्सुक हूँ और आप ही ऐसे पुरुष (नर) को जानने में समर्थ हैं ।

अतः स्वयं देवर्षि नारद और महर्षि वाल्मीकि भी राम को अवतार पुरुष नहीं मानते हैं। रामायण की मुख्य नारी पात्र सीता अपने आपको साधारण स्त्री ही मानती हैं और अपने इस जन्म के दुःखों का कारण पूर्वजन्म के किये हुए पाप समझती हैं । (सुदंरकाड 24:18, युद्धकांड 1113, 36, 36, उत्तरकांड 48:3–4) । राक्षसों के प्रति राम की हिंसात्मक प्रवृति देखकर सीता राम के परलोक के विषय में भी चिंतित रहती हैं । (अरण्य कांड 9:12) इसी प्रकार लक्ष्मण भी राम को भगवान स्वरूप में स्वीकार नहीं करते । (अरण्य कांड 61:24) पराक्रम देखकर हनुमान अवश्य राम की तुलना विष्णु से करने लगते हैं । (सुंदरकांड 34:29, 37–24) लेकिन राम विष्णु का ही स्वरूप हैं,यह नहीं मानते । रावण के सम्मुख अपनी वीरता को प्रकटित करते हुए हनुमान गर्व के साथ कहते हैं :

विष्णुना नास्मि चोदितः ।
x x x

केनचिदरामकार्येण आगनोस्मि तवान्तिकम् ।
(सुंदरकांड 50:13, 18)

अर्थात, मैं विष्णु की ओर से नहीं आया हूँ बल्कि राम की ओर से दूत के रूप में आया हूँ। राम, रामावतार नहीं हैं, इसका तर्कसंगत प्रमाण हमें रामायण के मुख्य पात्र राम से प्राप्त होते हैं । राम अगर नारायण के स्वरूप होते तो वो नारायण तथा मधुसूदन से प्रार्थना कैसे करते? (अयोध्याकांड 6:3–7) । अपराध के लिए स्वयं विधाता से क्यों डरते? (अयोध्या कांड 22:14)। रावण वध के बाद राम सीता से कहते हैं

यात्वं विरहिता नीता चलचितेन रक्षसा।
दैवसंपदितो दोषो मानुषेण मयाजितः । (युद्धकांड 115:5)

अर्थात, जब तुम आश्रम में अकेली थी, उस समय वह चंचल चित्तवाला राक्षत तुम्हें हर ले गया । यह दोष मेरे ऊपर दैववश प्राप्त हुआ था, जिसका मैंने मानव साध्य (मानुषेण) पुरुषार्थ के द्वारा मार्जन किया।

इसके अतिरिक्त युद्धकांड में भी श्रीराम स्वयं अपना परिचय प्रदान करते हुए कहते हैंः आत्मानं मानुषं मन्ये रामं दशरथात्मजम् । (युद्धकांड 117:11) अर्थात, मैं तो अपने आप को दशरथ पुत्र राम, एक मनुष्य ही समझता हूँ । अतः जहाँ जहाँ भी राम का अवतार प्रसंग का अवतारणा की गई है वह निश्चित रूप से प्रक्षिप्त समझना ही समझदारी होगा।

विपुलाच पृथ्वी तथा अनंत समय के अंतर्गत मूल वाल्मीकि रामायण में प्रक्षिप्तकारों ने अपने मनगढंत उपाख्यानों को जोड़कर एक विकृतीकरण स्वरूप को गढ़ने की चेष्टा की है। अधुनातन समाज को एक आदर्श संदेश प्रदान हेतु रामायण से प्रक्षिप्तांशों को हटाकर निर्मल तथा मौलिक रूप प्रदान करना हमारा कर्त्तव्य है ।

संदर्भ सूची

1. जाकोवी, हरमान (1960), डस रामायण, बरोदाः ओरिऐंटाल इंस्टीच्युट
2. बुल्के, फादर कामिल (1972), रामकथा, प्रयागः हिंदी परिषद प्रकाशन
3. वाल्मीकि (1999) श्रीमद्वाल्मीकिय रामायण, गोरखपुर : गीताप्रेस,